नाटक लोला मैना

लक्ष्मीनारायण लाल

नाटक तोता मैना

लक्ष्मीनारायण लाल

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद

श्री एस० एस० एस० ठाकुर को

सप्रेम

मैंने अपना यह नाटक देखा !

दर्शकों के बीच में बैठकर अपना नाटक खेले जाते हुए देखना बड़े संकट और जोखिम का काम है, विशेषकर जब दर्शक नाटककार को पहचानते हों। नहीं तो अपने नाटक के देखने का उत्तम उपाय यह है कि दर्शकों से बिल्कुल पीछे बैठकर चुपचाप अपना नाटक देखकर भाग जाया जाय।

किन्तु पिछले वर्ष लखनऊ में आयोजित वृहत् मंच पर जब मेरा यह नाटक 'तोता-मैना : एक दास्तान' (तब यही नाम दिया था इसका) खेला जाने लगा, तब मुझसे वैसा न हो सका।

लेकिन उस सम्बन्ध में और कुछ बताने के पहले यह नाटक क्या था इसे बता दूँ। तोता-मैना अपने यहाँ की प्रसिद्ध लोकगाथा है न। उसी का आधार लेकर उसी के भीतर से मैंने यह नाटक लिखा है। तोता-मैना का पुरुष-स्त्री के स्तर से सनातन का चला आता झगड़ा और प्रतिस्पर्धा प्रसिद्ध ही है। तोता का पक्ष है कि पुरुष अच्छा, स्त्री खराब है। इसके विपरीत मैना का पक्ष है कि स्त्री अच्छी, पुरुष खराब।

मूल तोता-मैना में दोनों पक्षी अपने-अपने पक्ष की पुष्टि में अलग-अलग क़िस्से सुनाते हैं क्योंकि वह किस्सों का संग्रह है, पर इस नाटक में स्वभावतः केवल एक दास्तान की रचना हुई है। पर दास्तान की प्रकृति वही रखी गयी है—राजारानी की कथा; उनके पूर्व जीवन के कथा-तत्व; और प्रेतात्मा जैसे अयथार्थ चरित्र।

दास्तान तोता शुरू करता है, पुरुष के पक्ष से। और उसी दास्तान के विकास से दूसरा अगला पक्ष, जिसका सूत्र-संचालन मैना करती है, पुरुष के विपक्ष में पड़ता है। इसी तरह एक ही दास्तान के आधार पर तोता-मैना दोनों को अपने-अपने पक्ष प्राप्त हो जाते हैं। किन्तु दास्तान में स्त्री-पुरुष का झगड़ा सुलझने के बजाय उलझ जाता है। स्थितियाँ कटु से कटुतर और करुणतम हो जाती हैं। तभी तोता-मैना के झगड़े का निपटारा जंगल का हंस करता है। और तोता-मैना की वह शादी करा देता है। उस आनन्दोत्सव में जंगल के पक्षी गाते-नाचते हुए आते हैं और इस तरह समूह-नृत्य के अन्तस से यह गायन उठता है :

तोता-मैना की हुई जैसे मुराद पूरी
ईश्वर आप सबकी करे वैसे ही मुराद पूरी।
यहाँ न पुरुष बड़ा
यहाँ न नारि बड़ी
दोनों हैं रथ की धुरी—
ईश्वर आप सबकी करे वैसे ही मुराद पूरी।

और इसका रंगमंच !

●

इस नाटक का रंगमंच विशुद्ध लोकतत्वों के साथ है। लोक-गीत,लोक-संगीत लोक-कथा और लोक-मंच —मुक्त आकाशी प्रकृति (Open air) का। हुए आते हैं। नाटक शुरू होने से पूर्व गायक-वादक हारमोनियम और ढोलक बजाते दर्शकों से आशीष मांगते हैं; तोता-मैना नाटक का विज्ञापन भी करते हैं। इसके उपरान्त ही तोता-मैना का नृत्यवत गतियों में प्रवेश; लयवत कथोप-कथन; फिर तोता का सहसा नाटक का सूत्रधार बन जाना :

दिलवालो !
खेलवालो !
लगा दो ताम-झाम
शुरू हो अपना काम।

फिर दास्तान अर्थात् नाटक शुरू और तोता-मैना मंच से ग़ायब।

नाटक में अंक-विधान नहीं है। आदि से अन्त तक नाटक एक सूत्र से प्रवहमान रहता है। बीच-बीच में, बल्कि यूं कहा जाय कि दास्तान के हर नये मोड़ पर, विकास-क्रम पर वही गायक-वादक आते हैं। पृष्ठभूमि से भी कभी-कभी गायन चलता है और बीच-बीच में तोता-मैना की नृत्यवत अवतारणा, नोक-झोंक, और अभिनटन आदि होता है।

निश्चय ही रंगशाला से बाहर विस्तृत मैदान में उतने बड़े पैमाने पर निर्मित मंच पर वह रंग-अनुष्ठान समूचे उत्तर भारत के लिए अपने ढंग का सर्वप्रथम आयोजन था, जिसके संयोजक और निर्देशक थे रेडियो के प्रसिद्ध नाट्य-शिल्पी एस० एस० एस० ठाकुर।

नाटक बंधे मंच पर प्रस्तुत हो रहा था, किंचित आधुनिक मंच-रीति से। नाटक के विकास-क्रम के अनुसार मंच-सज्जा, मंच-दृश्य बदलता जा रहा था। जैसे, जब तोता-मैना का संवाद और नोकझोंक का अनुक्रम आता था, तब जंगल का पटदृश्य; और जब राजभवन का प्रसंग आता था, तब राजभवन का दृश्य। फिर जब पहाड़ की चोटी पर से प्रेतात्मा के आने का दृश्य था, तब गहरे मंच पर पहाड़ की चोटियों का मनहर दृश्य—पीछे नीले आकाशीपट से संभला हुआ, तथा उस पर विविध ढंग के प्रकाश।

पर नाटक में मंच-विधान के नाम पर केवल यह दिया गया है कि दर्शक के सामने वादक और गायक एक राजद्वार चिन्ह और एक राजमार्ग चिन्ह लगाते हैं, और तोता सूत्रधार के रूप में उस दृश्य-विन्यास का परिचय और वर्णन दे देता है, बस। शेष हैं तोता-मैना का आना जाना, और नृत्यवत गतियों, चेष्टाओं से दृश्य, अनुक्रम और स्थिति की प्रतिष्ठा करते चलना।

इस तरह 'तोता-मैना : एक दास्तान' नाटक के उस सारे लोकतत्व, रंग-तत्व, गायन, अभिनटन से नाटक की अन्विति अवश्य प्रतिफलित हुई पर समूची नाट्यकृति में धर्मनिष्ठ उसका सहज रंगमंच उजागर न हो सका। लगा कि सहज भोले-भाले लोकमंच-तत्त्व को सिनेमा के शहरी दर्शक वर्ग के चक्कर में फैशनेबुल बनना पड़ा! क्योंकि लोकमंच का आवश्यक गुण तो है उसका सहज खुलापन।

वैसे समूचे नाटक का अभिनय पक्ष, वाक्शक्ति, स्वर, सामंजस्य की दृष्टि से सुन्दर था, किन्तु अभिनय पक्ष में गति-प्रचार तोता-मैना, वृद्ध और प्रेतात्मा को छोड़कर अन्य पात्रों का दोषपूर्ण था। चरित्रों का अभिनय क्षेत्र अनिश्चित होने के कारण, और कभी 'माइक' हेतु निर्जीव ढंग से स्थिर होने के कारण मन में दृश्य चित्र बार-बार खंडित हो जाता था।

किन्तु आदि से अन्त तक श्री ठाकुर के उस रंग-अनुष्ठान ने दर्शक वर्ग को अपने में बाँधे रखा, यह अपने आप में एक बड़ी सफलता थी।

पर मेरे सामने एक मूल प्रश्न उभरा, जिसके अन्तस में उसी सन्दर्भ के अनेक प्रश्न थे: इस नाटक के लिए वह तड़क-भड़क वाला आधुनिक मंच क्यों? गायन विधि पर फिल्मी धुनों की वैसी छाप क्यों?

निर्देशक ने उदास होकर बताया—यहाँ के लोग यही चाहते हैं!

'पर मेरा नाटक तो 'यह' नहीं चाहता!'

हम दोनों एक दूसरे की आँखों में देखते रह गये...

२ फरवरी, १९६२ — लक्ष्मीनारायण लाल
१७, तुलाराम बाग़
इलाहाबाद ६

पात्र

•

तोता और मैना

राजा

वृद्ध

सत्कर्म

प्रेतात्मा

रानी

मंत्री

हंस

गायक और वादक

पहला भाग

[गायक हारमोनियम बजाता हुआ गाता जाता है, पीछे दूसरा ढोलक बजाता आता है]

सब का अशीस है
सब को सलाम है
खेल अब शुरू है
सब को प्रनाम है।

[तेज संगीत के उपरान्त]

सुनो मेरे यारो
सुनो मेरे प्यारो
किस्सा तोता-मैना
दिल में विचारो।

[दूसरा तर्ज संगीत]

दास्तां पुरानी, नया है ज़माना
खेल बेहतरीं है
फिर आज़माना।

[संगीत की गति सहसा फिर बदल जाती है]

यह फिल्म नहीं थेटर
ये थेटर है सबका
ये थेटर है जन का
ये थेटर है मन का।
सब का
जन का
मन का !!!
सुनो मेरे यारो
सुनो मेरे प्यारो
किस्सा तोता-मैना
दिल में बिचारो
(दर्शकों के सामने से गाते हुए)
यह फिल्म नहीं थेटर
यह फिल्म नहीं थेटर
यह थेटर है सबका
यह थेटर है जन का
यह थेटर है मन का
सबका जनका मनका !!!

प्रस्थान

[दायीं ओर से मैना और बायीं ओर से तोता नृत्यवत् गतियों में प्रविष्ट होते हैं]

मैना : मैं, मैना मैना मैना !
तोता : मैं, तोता तोता तोता !
मैना : मैं, मैना मैना मैना !
तोता : मैं, तोता तोता तोता !

[मैना गंभीरता से तोता को देखती है और तोता मैना को]

मैना : तो क्या ?
तोता : तो क्या ?
मैना : मैं हूँ मैना अपने घर की रानी हूँ मैं !
तोता : मैं हूँ तोता अपने घर का राजा हूँ मैं !
मैना : मैं हूँ मैना अपने दिल की रानी हूँ मैं !
तोता : मैं हूँ तोता अपने मन का राजा हूँ मैं !
मैना : **(गुस्से से तोता को देखती हुई)** तो ?
तोता : मैं अतिथि तुम्हारा
दुर्दिन बहुत आज है मैना
यहीं डाल पर तनिक बैठ कर करूँ गुज़ारा
मैना : तोता सुन ले
मैं हूँ मैना !
तोता : वह देख रहा हूँ !
मैना : पुरुष जाति मत बोल बीच में !

तोता : ओ हो ऐसा !

मैना : हाँ हाँ
ऐसा ऐसा ऐसा !

तोता : पर ऐसा क्यों ?

मैना : तू पुरुष जाति
मुझे तुम पर विश्वास नहीं
निर्दय, बेपीर, विश्वासघाती !

तोता : क्या कहा ?
पुरुष बेपीर, निर्दयी, विश्वासघाती !

मैना : हाँ हाँ हाँ !

तोता : आश्चर्य है
स्त्री खुद पुरुष को बेपीर बताये !

मैना : चुप रह
उड़ भाग यहाँ से !

तोता : ओ हो स्त्री जाति !
क्या कहने भाई क्या कहने
त्रिया चरित जाने नहिं कोउ
खसम मारि के सत्ती होय !

मैना : चल चल चल !
झूठे का मुँह सब दिन काला !
बड़ा चला है बोलन वाला !!

तोता : तो बोल बंद !
अब खेल शुरू !!
(ताली बजा कर पुकारता है)
खेल वालो
दिल वालो !
लगा दो ताम-झाम !
शुरू हो अपना काम !

[वही दोनों गायक-वादक राजमार्ग का चिन्ह उठा कर लाते हैं और बायीं ओर सजा कर रख देते हैं—दायीं ओर राजभवन का एक द्वार सजा देते हैं]

तोता : (बताता रहता है)
देख मैना !
यह चरित-कथा है नारि जाति की !
कंचनपुर के एक नगर में
अंगध्वज राजा रहता था
उसकी रानी चन्द्रमुखी थी
बड़ी रूपसी
बड़ी सुन्दरी
और राजा ?
अतुल प्रजा-पालक था

वेश बदल कर रात-रात भर घूमा करता
और एक रात.....!

[दोनों नृत्यवत् गतियों से प्रस्थान करते हैं। [संगीत] बायीं ओर से एक वृद्ध रोता हुआ प्रविष्ट होता है और राजमार्ग की सीढ़ियों पर सिर टेक कर निःशब्द रोता रहता है। पृष्ठभूमि से यह कथन-स्वर [गायन] उभरता है]

गायन

दुख-सुख प्रजा जो लखै, सुत सम पालै वाहि
धर्म-न्याय सब को करै, राजा कहिये ताहि !
निशि-दिन प्रजा जो रखै, नीति-अनीति विचार
जो ताकी अपराध है, तोसों कर निरधार !
जा हित सों पुत्रहि लखै जो हित सो परिवार
ताहि भाव परजेहि लखै, सो राजा सरदार !

[दायीं ओर से भेष बदले हुये राजा का प्रवेश]

राजा : कौन हो तुम ? (पास आकर) रोओ नहीं। बोलो कौन हो तुम ।

वृद्ध : (चुप रो रहा है)

राजा : बोलो, क्या दुःख है तुम्हें !

वृद्ध : (देख कर रह जाता है)

राजा : हाँ हाँ, धीरज रखो। तुम्हारा दुःख निश्चय ही दूर होगा।

वृद्ध : तुम कौन हो ?

राजा : मैं—मैं एक नागरिक हूँ !

वृद्ध : तुम—तुम नागरिक हो ? नागरिक—तुम इतनी रात गये तक घूमते हो ?

राजा : तुम वृद्ध होकर इस रात के समय जब यहाँ इस तरह रो रहे हो, फिर तो मैं यहाँ केवल घूमता ही हूँ। उठो, तुम इस तरह यहाँ क्यों रो रहे हो ?

[वृद्ध संभल कर सीढ़ी पर बैठ जाता है]

राजा : याद रखो वृद्ध, जहाँ तुम बैठे हो, यह राज-मार्ग की सीढ़ियाँ हैं। यह जगह रोने की नहीं। बोलो क्या दुःख है तुम्हें ?

वृद्ध : कौन हो तुम ?

राजा : एक नागरिक !

वृद्ध : नागरिक !

राजा : पर तुम मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो ? ऐसे न देखो मुझे। विश्वास रखो, मेरी भुजाओं में इतनी ताकत है कि मैं तुम्हारी कोई भी सहायता कर सकता हूँ !

वृद्ध : कोई भी सहायता ?

राजा : हाँ

वृद्ध : पर केवल तुम्हारी भुजाओं से वह सहायता नहीं हो सकती। उसके लिये आत्म-बल चाहिये।

राजा : **(बाहें फैलाकर)** परीक्षा कर देखो, शायद वह भी है। बोलो, आँसुओं की भाषा मैं नहीं समझ पा रहा हूँ!

वृद्ध : बोलूँ ? धोखा तो नहीं होगा ?

राजा : नहीं, कभी नहीं!

वृद्ध : **(उठता हुआ)** तो पहले प्रतिज्ञा करो कि जो कुछ मैं तुमसे बता रहा हूँ उसे तुम किसी से भी नहीं कहोगे। चलो प्रतिज्ञा करो।

राजा : प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हारी इस बताई हुई बात को किसी से नहीं कहूँगा। विश्वास रखो...मैं वचन देता हूँ।

वृद्ध : खबरदार! यदि तू इसे किसी के सामने कहेगा तो उसी क्षण पत्थर हो जायेगा!

राजा : नहीं नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा!

वृद्ध : तो सुनो। अभी कुछ ही देर बाद...रात के तीसरे पहरे के लगते ही इस नगर के राजा अंगध्वज को एक प्रेत आकर मार डालेगा। इसीलिये मैं यहाँ रो रहा हूँ। ऐसा धर्मात्मा प्रजा-पालक राजा हमको कहाँ मिलेगा ?

राजा : राजा अंगध्वज की मौत प्रेतात्मा से होगी ? ऐसा क्यों ? वह प्रेतात्मा कौन है ? कहाँ से आयेगा ? राजा

ने उसका क्या बिगाड़ा है ? राजा तो इससे बिलकुल अनजान है। यह कैसा रहस्य है ? ईश्वर की यही इच्छा है क्या ?

वृद्ध : हाँ सामने देखो...पर्वत की उस चोटी पर...जहाँ से अभी वह तारा टूटा है, वहाँ से प्रेतात्मा नीचे उतर कर इस महल में सोते हुए राजा को सहसा दबोच लेगा, और एक ही घूंट में उसके शरीर का सारा रक्त पी जायेगा। फिर उसके अस्थिपंजर को घसीटता हुआ वह उसी चोटी पर ले जायेगा...वह देखो, उसकी काली चादर से ढकी हुई वह पहाड़ी।

राजा : पर ऐसा क्यों ? राजा से उसका क्या वैर ?...दयावान् राजा ने उसका क्या बिगाड़ा है ?

वृद्ध : यह सच है, पर राजा का उससे पूर्व-जन्म का वैर है। यह जीवन हमारे पूर्व जन्मों से जुड़ा हुआ है, समझे!

राजा : राजा से उसका पूर्व-जन्म का वैर! यह असम्भव है। यह सरासर राजा के साथ कोई अमानवीय छल किया जा रहा है।

वृद्ध : नहीं, नहीं सुनो! हाँ, यह अंगध्वज राजा अपने पिछले जन्म में एक साहूकार था। इसका नाम था मणिसेन और इसकी स्त्री का नाम था केसर, जो बड़ी सुन्दरी थी। मणिसेन अपनी सौदागरी में कहीं दूर देश को गया था, और उसकी स्त्री केसर घर में थी। उसकी सेवा में

अठारह साल का एक ब्राह्मण बालक था, रत्नजोति जिसका नाम था। हुआ यह कि केसर रत्नजोति को अपनी पाप-वासना का साधन बनाना चाहती थी। पर रत्नजोति ने उसका विरोध किया। और इसकी भयानक प्रतिक्रिया में केसर ने पति द्वारा उस अबोध सच्चरित बालक से जो बदला लिया, वह बेहद निर्मम था। रात के तीसरे पहर में केसर ने मणिसेन के हाथों जीवित रत्नजोति को अपने आँगन में गड़वा दिया। (**रुककर**) वही रत्नजोति अब प्रेत हुआ है, और आज ही अभी वह अपनी अबोध निर्मम मृत्यु का बदला इस राजा से लेगा।

[वृद्ध फफक कर रोने लगता है]

राजा : (वृद्ध को सम्हालता हुआ) धीरज रखो! यदि यह घटना सच है तो इसका यह न्याय भी सत्य है। राजा को यह भोगना होगा।

वृद्ध : ऐसा धर्मात्मा राजा! राजा! राजा का कल्याण हो!

[यह कहता हुआ वृद्ध बाहर निकल जाता है। राजा वहीं चिंतित खड़ा रह जाता है। कभी वह सामने के पर्वत शिखर को देखता है, कभी अपने भवनद्वार को]

राजा : (भाव-त्रस्त) पर्वत-शिखर पर वह तारा टूट रहा है!

नहीं, नहीं नहीं, मैं ऐसे नहीं मर सकता। मैं प्रेतात्मा से पूछूंगा। उससे मैं अपना न्याय करूंगा। (**रुक कर**) पर मैं न्याय करने वाला कौन होता हूँ?...अपराधी न्यायाधीश नहीं हो सकता। (**राजभवन-द्वार की ओर बढ़कर**) द्वारपाल...नहीं नहीं, कोई नहीं। सावधान राजा, तूने प्रतिज्ञा की है। अपने इस आत्मदाह को तू किसी से नहीं कहेगा। (**सहसा बढ़कर बायीं ओर**) वृद्ध सुनो, मैं ही वह अपराधी राजा अंगध्वज हूँ। मैं वही राजा हूँ। सुनो वृद्ध! मैं ही वह राजा हूँ।

[**अपने ऊपर के वस्त्र हटाते ही राजा का राजसी परिधान प्रकट हो जाता है**]

राजा अंगध्वज को ढूंढने में कहीं प्रेतात्मा को कष्ट न हो। (**दूर पर्वत शिखर की ओर देखते हुए**) प्रेतात्मा आओ। तुम्हारे आने का समय अब हो गया होगा। विश्वास रखो, मेरा समूचा अंतःपुर, मेरी सेना मेरे कर्मचारी और परिजन सोते रहेंगे। मैं किसी को नहीं जगाऊँगा। अपराध का कर्त्ता मैं अकेला था, उसका न्याय और फल भी मैं अकेले ही भोगूंगा। मेरे आस-पास और कोई नहीं होगा। कोई नहीं होगा!!! (**रुककर**) कौन-कौन?

[**सहसा सामने से शुभ्र वस्त्रों में सत्कर्म का प्रवेश**]

सत्कर्म : राजा तुम अकेले नहीं रह सकते।

राजा : कौन हैं आप ?

सत्कर्म : मैं तुम्हारा सत्कर्म हूँ राजा । तुम्हारा पुण्य हूँ मैं ।

राजा : पर यह समय तुम्हारे यहाँ आने का नहीं है । राजा व्यक्ति भी है और अपने कुकर्मों का फल-भोक्ता भी है । मेरे सत्कर्म, रात का यह तीसरा पहर मेरे उसी फल-भोग का है ।

सत्कर्म : तभी यहाँ उपस्थित हुआ हूँ राजा । तुमसे मेरी सत्ता अलग नहीं है । राजा, मैं तुम्हीं से प्रकट हुआ हूँ और मैं अभी तुम्हीं में अन्तर्ध्यान हो जाऊंगा । राजा तुम्हें याद है, बहुत दिन पहले मैंने तुम्हें एक उपदेश दिया था : 'भूपति या जग के विषै, रात्रि जागरण सार; ताको फल उत्तम मिले, ऋषिजन कहा विचार' । इस उपदेश का राजा तूने पालन किया है । तुम्हारी यह चेतना उसी उपदेश-पालन का ही उत्तम फल है ।

राजा : सत्कर्म ! तुम्हारे इस दर्शन से मुझे आत्मबल मिला है । अब मुझे नियति का न्याय अवश्य भोगना है ।

सत्कर्म : इस प्रसंग में राजा, मेरा तुमसे एक दूसरा निवेदन है । सुनो, शत्रु और वैरी का अतिथि-सत्कार मित्र से भी अधिक होना चाहिये । बस, तम्हारा कल्याण हो राजा । विपत्ति में धैर्य बनकर मैं सदा तुम्हारा साथ दूंगा, जै हो ।

[सत्कर्म अदृश्य होने लगता है]

राजा : मेरे सत्कर्म, रुको ! ओह, तुम अन्तर्ध्यान हो गये । **(रुक कर)** रात का तीसरा पहर लग गया । शिखर पर अनेक तारे टूट रहे हैं । **(सहसा बायीं ओर घूम कर)** कौन ? कौन हो तुम ?

[प्रेतात्मा का प्रवेश]

प्रेतात्मा : तुम मुझे नहीं पहचानते राजा !

राजा : ओह, तुम आ गये । स्वागत है तुम्हारा । मैं तुम्हें भली भाँति पहचानता हूँ । आओ यहाँ बैठो । रास्ते में तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं हुआ ?

प्रेतात्मा : किस कष्ट की बात करते हो तुम ?

राजा : मैं यहाँ खड़ा तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था, ताकि मुझे ढूंढने में तुम्हें कोई कष्ट न हो ।

प्रेतात्मा : कष्ट और दुख ! तुम्हें क्या इसका अनुभव भी है ?

राजा : हाँ, हम मनुष्यों का जीवन ही दुःखमय है ।

प्रेतात्मा : चुप रहो ! जो कह रहे हो, उसका मतलब भी जानते हो ? या दूसरों की कही बातों के बोलने का महज अभ्यास है ? तुम्हीं बोलो, कभी विचारा भी है कि किसकी बात में कितना अर्थ है और कितना अनर्थ है ?

राजा : क्यों नहीं ।

प्रेतात्मा : झूठ बोलते हो तुम ! तुम्हारी बुद्धि सदा से स्त्री के पास

है। तुम कभी अपने मालिक नहीं रहे हो। तुम में जन्म से ही भय समाया हुआ है कि कहीं स्त्री तुम्हें छोड़ न दे। तभी वह तुम्हें बन्दरों की तरह नचा रही है।

राजा : नहीं नहीं, ऐसा नहीं। स्त्री हमारे यहाँ पूज्य है।

प्रेतात्मा : यह तुम नहीं बोल रहे हो, तुम्हारे अन्दर बैठी वह स्त्री बोल रही है, जो हिंसक है, घातिनी है। तुमने मुझे पहचाना ?

[राजा उसकी ओर एकाग्र-दृष्टि से देखने को होता है]

प्रेतात्मा : खबरदार, मुझसे जो अपनी आँख मिलाई। तुम इसके पात्र नहीं हो ! तुमने मुझको पूरा नहीं पहचाना। पर तुम मुझे क्या पहचानोगे ? जब तुम, तुम नहीं हो।

राजा : आप आसन ग्रहण कीजिये।

प्रेतात्मा : आखिर क्यों ?

राजा : आप बहुत कांप रहे हैं।

प्रेतात्मा : हूँ ! मेरा कांपना तुम देख रहे हो ? पर खबरदार तुम मुझे दया से देखने की कोशिश मत करो। मैं अब तुम्हारी दया की परिधि में नहीं, तुम मेरी दया के भीतर हो।

राजा : मैं तुमसे विनत हूँ।

प्रेतात्मा : मुझसे नहीं, अपनी मौत से। और यह मौत क्या है ? तुम्हारी यह मौत स्त्री है। (रुककर) तुमने कुछ मुझसे

पूछे बिना ही जिन्दा जमीन में गाड़ दिया था; याद करो, नहीं याद आ रहा है ?

राजा : (चुप रहता है)

प्रेतात्मा : रात का वह तीसरा पहर। तुमने मुझे बरबस खींचकर ज़मीन में जिन्दा ही गाड़ दिया। तुम्हारी स्त्री खड़ी हंस रही थी। मैं तुमसे कुछ कहना चाहता था। काश ! तुमने मुझे मारकर जमीन में गाड़ा होता।

राजा : आओ, मैं तुम्हारे न्याय का स्वागत करता हूँ। साथ ही में तुम्हारा भी स्वागत करता हूँ।

प्रेतात्मा : तुम क्या स्वागत करोगे मेरा, मैं स्वयं अपना स्वागत हूँ। मुझे तुम्हारे भाव नहीं चाहिये। तुम्हारी तड़पती हुई अंतिम साँस चाहिए। खबरदार, अगर तूने मेरी आँखों को देखा। मैं तुझे भस्म नहीं करना चाहता। मैं तुझे निचोड़ कर एक ही घूंट में पी लेना चाहता हूँ। मेरी प्यास मेरी भूख है।

राजा : मैं उसके लिए प्रस्तुत हूँ, पर उसके पूर्व...मैं तुम्हारा अतिथि-सत्कार करना चाहता हूँ।

प्रेतात्मा : अपने राजमहल का ठंडा पानी पिला कर ? याद रखो, रत्नजोति की तड़पती आत्मा की प्यास तुम्हारे रक्त-पात से बुझेगी। कायर, बुज़दिल, स्त्रैण। जिस क्षण तूने मेरे रत्नजोति को जमीन में गाड़ना शुरू किया था, उस समय तेरी दुश्चरित्र, हत्यारी रानी ने किस

है। तुम कभी अपने मालिक नहीं रहे हो। तुम में जन्म से ही भय समाया हुआ है कि कहीं स्त्री तुम्हें छोड़ न दे। तभी वह तुम्हें बन्दरों की तरह नचा रही है।

राजा : नहीं नहीं, ऐसा नहीं। स्त्री हमारे यहाँ पूज्य है।

प्रेतात्मा : यह तुम नहीं बोल रहे हो, तुम्हारे अन्दर बैठी वह स्त्री बोल रही है, जो हिंसक है, घातिनी है। तुमने मुझे पहचाना ?

[राजा उसकी ओर एकाग्र-दृष्टि से देखने को होता है]

प्रेतात्मा : खबरदार, मुझसे जो अपनी आँख मिलाई। तुम इसके पात्र नहीं हो ! तुमने मुझको पूरा नहीं पहचाना। पर तुम मुझे क्या पहचानोगे ? जब तुम, तुम नहीं हो।

राजा : आप आसन ग्रहण कीजिये।

प्रेतात्मा : आखिर क्यों ?

राजा : आप बहुत कांप रहे हैं।

प्रेतात्मा : हूँ ! मेरा कांपना तुम देख रहे हो ? पर खबरदार तुम मुझे दया से देखने की कोशिश मत करो। मैं अब तुम्हारी दया की परिधि में नहीं, तुम मेरी दया के भीतर हो।

राजा : मैं तुमसे विनत हूँ।

प्रेतात्मा : मुझसे नहीं, अपनी मौत से। और यह मौत क्या है ? तुम्हारी यह मौत स्त्री है। (रुककर) तुमने कुछ मुझसे

पूछे बिना ही जिन्दा जमीन में गाड़ दिया था; याद करो, नहीं याद आ रहा है ?

राजा : (चुप रहता है)

प्रेतात्मा : रात का वह तीसरा पहर। तुमने मुझे बरबस खींचकर जमीन में जिन्दा ही गाड़ दिया। तुम्हारी स्त्री खड़ी हंस रही थी। मैं तुमसे कुछ कहना चाहता था। काश ! तुमने मुझे मारकर जमीन में गाड़ा होता।

राजा : आओ, मैं तुम्हारे न्याय का स्वागत करता हूँ। साथ ही में तुम्हारा भी स्वागत करता हूँ।

प्रेतात्मा : तुम क्या स्वागत करोगे मेरा, मैं स्वयं अपना स्वागत हूँ। मुझे तुम्हारे भाव नहीं चाहिये। तुम्हारी तड़पती हुई अंतिम साँस चाहिए। खबरदार, अगर तूने मेरी आँखों को देखा। मैं तुझे भस्म नहीं करना चाहता। मैं तुझे निचोड़ कर एक ही घूंट में पी लेना चाहता हूँ। मेरी प्यास मेरी भूख है।

राजा : मैं उसके लिए प्रस्तुत हूँ, पर उसके पूर्व...मैं तुम्हारा अतिथि-सत्कार करना चाहता हूँ।

प्रेतात्मा : अपने राजमहल का ठंडा पानी पिला कर ? याद रखो, रत्नजोति की तड़पती आत्मा की प्यास तुम्हारे रक्त-पात से बुझेगी। कायर, बुज़दिल, स्त्रैण। जिस क्षण तूने मेरे रत्नजोति को जमीन में गाड़ना शुरू किया था, उस समय तेरी दुश्चरित्र, हत्यारी रानी ने किस

तरह नफ़रत से मुझ पर थूका था ! **(दिखाता हुआ)** यह देख उस घृणा का निशान । यह घाव अब तक अच्छा नहीं हुआ ।

[राजा बढ़कर स्नेह से उस घाव को छूना चाहता है, प्रेतात्मा आवेश में एक ओर हट जाता है]

प्रेतात्मा : इसे छुआ तो राजमहल में भूकम्प आ जायेगा । यह घाव मेरा है, इसे कोई नहीं छू सकता । यही मेरी ताक़त है । मैं तब से कहीं बैठ नहीं सका, कुछ खा-पी नहीं सका । इस भयानक स्वरूप को ढोता हुआ दिन-रात तबसे घूम रहा हूँ ।

[राजा की आँखों में जल आ जाता है]

प्रेतात्मा : यह तुम्हारी आंखों में सहसा क्या बरस गया राजा ? यह कौन सी चीज़ है ?—बोलो यह क्या है ?—मैं इस का नाम जानना चाहता हूँ, शायद कभी देखा है इसे ।

राजा : आँसू ।

प्रेतात्मा : आँसू **(ठहाका मार कर हँसता है)** आँसू—ओ हो हो ! यह कहाँ से आता है राजा, बताओ मुझे !

राजा : हृदय से ।

प्रेतात्मा : हृदय...हृदय क्या होता है ?

राजा : जो यह सब बोझ रहा है—साँसें ले रहा है जो !

प्रेतात्मा : ओह ! यह तुम्हारी दुनियाँ की बातें हैं । मुझसे इनका कोई सरोकार नहीं । समय हो गया । आओ बढ़ो मेरे चंगुलों के भीतर !

राजा : केवल एक प्रार्थना है तुमसे ।

प्रेतात्मा : क्या है ?

राजा : तुम मेरी मौत से पहले थोड़ा-सा मेरा आतिथ्य स्वीकार करोगे । तुम न जाने कब के थके-प्यासे हो । मैं अपना आसन लाता हूँ, तुम उस पर थोड़ा आराम कर लो ।

[राजा जाने को होता है]

प्रेतात्मा : (क्रोध से) राजा सुनो ।

[राजा रुक जाता है]

प्रेतात्मा : तुम मुझमें दया जगाने की बेकार कोशिश मत करो । मैं अपने आहत मनुष्य की प्रेतात्मा हूँ ।

राजा : मैं वह देख रहा हूँ, फिर भी तुम्हें मेरा यह अंतिम आतिथ्य स्वीकार होगा, यह मेरी प्रार्थना है ।

[राजा तेजी से भीतर चला जाता है]

प्रेतात्मा : (पुकार कर) राजा सुनो, तुम अपनी अधर्मी रानी से मेरे यहाँ आने की सूचना नहीं दोगे । खबरदार ! यदि तूने छल से किसी और को जगाने की कोशिश की ।

[राजा भीतर से एक हाथ में जल और दूसरे में स्वर्ण-थाल—जिसमें उत्तम, व्यंजन और फलादि सुसज्जित हैं]

राजा : कृपा कर यह स्वीकार करें। यह राजा का अतिथि सत्कार नहीं, यह तुम्हें मेरे मनुष्य का सत्कार है।

प्रेतात्मा : वही मनुष्य जिसने अपनी दुश्चरित्र स्त्री के कहने से ही मेरे निर्दोष मनुष्य की वह हत्या की ?

राजा : जो भी हो। मैं तुमसे अपने प्राणों की भीख नहीं माँग रहा हूँ, तुम प्यासे हो, और यह शीतल जल है।

प्रेतात्मा : प्यास और इस जल से कोई सम्बन्ध है क्या ?—डरो नहीं, मैं तुम्हारी इस भावना का आदर करता हूँ। तुम मुझसे छल और नीति का खेल नहीं रच रहे हो, मैं तुम पर विश्वास करने जा रहा हूँ। पर याद रहे, मेरी भूख और प्यास अपनी है, यह अपनी ही तरह से बुझेगी। तुम मनुष्य होकर मेरी इस भूख-प्यास का अंदाज नहीं लगा सकते। **(रुक कर)** पर तुमने मेरी भूख-प्यास का आदर तो किया। तुमने अनुभव तो किया कि मैं प्रेत ही नहीं, आत्मा भी हूँ। **(रुक कर)** अब मैं जा रहा हूँ।

राजा : क्या ?

प्रेतात्मा : मैंने तुम्हें माफ़ किया।

[राजा के हाथ से बर्तन सहसा छूट कर गिर जाता है...]

राजा : नहीं नहीं, मुझे इस तरह क्षमा मत दो। रुको ! रुको !! मेरी हथेलियों में तुम्हारे ख़ून के दाग़ पड़े हैं।

[प्रेतात्मा चला जाता है। राजा लड़खड़ा कर द्वार की सीढ़ियों पर गिर पड़ता है। बाहर राजद्वार से गजर के बजने की आवाज आती है। कुछ ही क्षणों बाद सत्कर्म प्रकट होता है]

सत्कर्म : राजा ! जै हो ! कल्याण हो ! उठो ! तुम विजयी हुए। मृत्यु को अथिति मान कर उसका सत्कार करने वाला ही जीवन का सच्चा स्वामी है। **(राजा की बाँह पकड़ कर उठाता है)** उठो राजा। वह देखो, पहाड़ की उस चोटी पर वह कैसा धुआँ उठ रहा है ! उस धुएँ के पहाड़ पर वह पीली रोशनी देख रहे हो न ! वह धुआँ प्रतिहिंसा का है। और, वह पीली रोशनी अब प्रेतात्मा का स्वरूप है।

राजा : उसका स्वरूप बदल गया ?

सत्कर्म : हाँ, वह भावमुक्त हो गया। अब उसे दूसरा स्वरूप मिल रहा है। काले से पीला, फिर सफेद और सुबह वह अरुणोदय में घुल कर मानव-वर्ण को प्राप्त हो जायगा।

राजा : मानव !

सत्कर्म : हाँ, उसमें क्षमा का उदय हुआ है। तुम्हारे मंगल सत्कार

और कोमलभाव-स्पर्श ने उसे मानव अनुभूति दी है। देखो, अब वह मुक्त हो रहा है !

राजा : कहाँ ?

सत्कर्म : नहीं देख पा रहे हो ! अच्छा मेरे स्वर में स्वर मिला कर कहो...मुझसे अब कभी किसी का विश्वासघात नहीं होगा। मुझसे अब कभी किसी का विश्वासघात नहीं होगा !

[राजा यही वाक्य दुहराता रहता है, जैसे कहीं दूर से आरती—शंख की ध्वनि उतरती है और धीरे-धीरे सारे महल को अपने संगीत में बाँध लेती है। राजा की आँखें मुँदी हैं, हाथ श्रद्धा में जुड़े हैं, ओठों पर सत्कर्म के दिये हुये वाक्य हैं। सत्कर्म अंतर्ध्यान हो गया है उसी समय भीतर से दौड़ी हुई रानी आती है।]

रानी : कौन है ? क्या है, यह कैसा संगीत था देव ! यह क्या है ? यह क्या हुआ है—आप मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं ? यहाँ कौन आया था ? क्या हुआ यहाँ ?

राजा : **(जाग कर कुछ क्षण रानी को देखते हुये)** केसर !

रानी : केसर ! केसर कौन ? केसर नाम की कोई स्त्री यहाँ आई थी क्या ? आप बोलते क्यों नहीं ?

राजा : नहीं, नहीं, नहीं !!!—कुछ नहीं रानी ! यहाँ कुछ भी नहीं हुआ है। यहाँ कोई नहीं आया था।

रानी : नहीं यह झूठ है। यह केसर कौन थी ? मुझे बताइये नहीं तो...

राजा : सच रानी ! तुम्हारे सिवा यहाँ कोई स्त्री नहीं आयी। तुम मुझे जानती हो, मैं कभी झूठ नहीं बोलता।

रानी : पर आज आप मुझसे कुछ अवश्य छिपा रहे हैं। केसर कौन है ? यह नाम आपके होठों पर कहाँ से आया ?

राजा : केसर ! केसर किसी भी स्त्री का नाम हो सकता है।

रानी : पर किसी भी स्त्री का नाम आपके होठों पर नहीं आ सकता।

राजा : यदि केसर तुम्हारा ही नाम हो तो ?

रानी : हर्गिज़ नहीं। मेरा नाम रानी है।

राजा : रानी, हम वही नहीं हैं जो वर्तमान हैं, या जो सामने दीख पड़ते हैं। हमारी जड़ जीवन की इस सनातन गति में बहुत गहरी है, जिसे भोगते—गाड़ते हुए हम आज यहाँ आ पहुँचे हैं। हम अपने असंख्य नामों और कर्मों के यात्री हैं रानी !

रानी : नहीं, नहीं ! मैं आपकी बातों में आने की नहीं। मुझे सब बताइये—आदि से अन्त तक बताइये।

राजा : आदि से अन्त तक ?

रानी : हाँ !

राजा : सुनो...आदि मैं हूं, अन्त तुम हो रानी ! यही वह कथा है, समझ गयीं ?

रानी : सीधी भाषा में मुझे बताओ, मेरे संग छल मत करो।

राजा : विश्वास करो, तुम्हारे संग मेरा कोई छल नहीं। तुम्हारे जानने लायक इसमें कोई विशेष बात नहीं।

रानी : जो तुम्हारे लिये साधारण है, वही मेरे लिये विशेष है। तुम्हारे ओठों पर किसी पराई स्त्री का नाम आना तुम्हारे लिये साधारण बात होगी, मेरे लिये वही असाधारण है। मुझे बताओ नहीं तो मैं प्राण त्याग दूंगी।

राजा : प्राण त्याग दोगी! ओह, पर तुम्हारे सिवा मेरे जीवन में कोई पराई स्त्री नहीं है। मैं अपनी सौगन्ध देकर कह रहा हूँ।

रानी : मुझे उस रहस्य के जानने में विश्वास है, तुम्हारी सौगन्ध पर नहीं।

राजा : फिर मैं क्या बताऊँ?

रानी : तुम्हें बताना होगा।

राजा : यदि मैं धर्म से असमर्थ हूँ तो?

रानी : फिरभी बताना होगा तुम्हें।

राजा : रानी, हठ मत करो, मैं विवश हूँ। मान जाओ मेरी बात!

रानी : मैं भी जानने के लिये विवश हूँ।

राजा : रानी, मैं हाथ जोड़ कर कहता हूँ, वह किसी के सामने कहने की बात नहीं है।

रानी : किसी और के सामने कहने की बात न हो, पर मैं उसे

अवश्य जान लेना चाहूँगी, नहीं तो मैं तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगी।

राजा : सुनो सुनो रानी, ऐसा हठ मत करो। मेरी विवशता जानो, जिस व्यक्ति ने मुझसे यह बात बताई थी, उसने मुझ से कह दिया है कि तू यदि इस बात को किसी के भी सामने कहेगा तो पत्थर का हो जायगा। मैं उससे बचनबद्ध हूँ रानी।

रानी : चाहे तुम पत्थर के हो, चाहे न हो, पर तुम्हें उस बात को मुझसे अवश्य कहना होगा, नहीं तो मैं अभी अपना प्राण दे दूंगी।

राजा : हठ छोड़ दो रानी, विवेक से काम लो। उस बात को बताते ही मैं पत्थर हो जाऊंगा। तुम्हें मुझसे जरा भी मोह नहीं है क्या?

रानी : और तुम्हें क्या मुझसे मोह है?

राजा : है, यही तो बात है रानी, नहीं तो तुम मुझसे इस तरह का हठ नहीं करतीं।

रानी : जो भी हो, मैं बिना उस बात के जाने जीवित नहीं रह सकती।

राजा : और मैं उस बात को बताते ही निर्जीव हो जाऊंगा।

रानी : मैं और कुछ नहीं जानती।

राजा : **(चिंतित, चुप रहने के बाद)** फिर तो ऐसा करो रानी, कल प्रातःकाल उस शिखर के नीचे बहती हुई गंगा के

तट पर हम लोग चलें, वहीं तुम्हें यह बात बता कर मैं सदा के लिये पत्थर हो जाऊँगा। गंगा की धार में बह कर उस निर्जीव पत्थर को शायद कोई मूल्य ही प्राप्त हो जाय! क्यों रानी, चलने को तैयार हो ना?

रानी : तैयार हूँ।

राजा : एक बार फिर से सोच लो रानी। जिस स्त्री ने हठ किया है उसने अवश्य दुख पाया है।

रानी : मैं और कुछ नहीं सुनना चाहती।

[रानी आवेश में भीतर जाने लगती है, राजा बढ़कर उसके सामने विनत खड़ा हो जाता है]

राजा : रानी!

रानी : तुम्हारी रानी मर गई। हटो, मेरा रास्ता छोड़ दो।

राजा : नहीं नहीं, रानी क्यों मरेगी। रानी का राजा ही मरेगा।

[बाहर से राजा के मन्त्री का प्रवेश]

मन्त्री : महाराज की जै हो।

राजा : मन्त्री विजयसेन! तुम आ गये! अच्छा हुआ, सुनो तुम्हारे महाराज का अन्त समय आ गया।

मन्त्री : आप यह क्या कह रहे हैं महाराज!

राजा : मन्त्री, भावुकता से मुझे मत देखो। इसका अर्थ आज मुझे मालूम हो गया! वह देखो मेरी रानी को, मेरे

प्राणों की भूखी कोप किये बैठी है। मैं इसे अपने जीवन का एक अतिगर्हित रहस्य बताकर गंगा के तट पर शिलाखंड हो जाऊँगा।

मन्त्री : नहीं, असम्भव महाराज!

राजा : मंत्री विजयसेन! नियति की यही इच्छा है, वरना मैं स्त्री की माया में इतना अंधा न हुआ होता। आज रात्रि के तीहरे पहर के प्रारम्भ में यहाँ एक घटना घटी है। उसके विषय में मुझे एक व्यक्ति द्वारा यह श्राप-सौगंध मिला है कि मैं यदि उस बात को किसी के भी सामने व्यक्ति कर दूँगा तो उसी क्षण मैं पत्थर हो जाऊँगा। मुझसे मेरी रानी वही चाह रही है।

मन्त्री : महारानी! महारानी! ऐसा हठ मत करो। उस साधारण बात से आपके महाराज का जीवन मूल्यवान और श्रेयस्कर है।

[रानी जैसे कोप-भवन में बैठी है।]

राजा : विजयसेन, सब बेकार है। मृत्यु के अलावा मेरे लिए अब और कोई विकल्प नहीं है। जाओ, राजद्वार पर घोषणा करा दो कि राजा अंगध्वज गंगा के तट पर प्राण त्यागने जा रहे हैं। संसार याद रखेगा कि स्त्री का हठ पुरुष के प्राणों से भी अधिक मूल्य रखता है। राजघोषणा में यह भी स्पष्ट कर देना मंत्री, कि यह राजा अंगध्वज का आत्मन्याय नहीं है, बल्कि स्त्री के

आगे उसके व्यक्तित्व की यह विवशता है। इस पराजय और अपौरुषता के लिये मैं सारी प्रजा से क्षमा याचना करता हूँ। जाओ मन्त्री मोह में मत पड़ो। मोह मनुष्य को कुपात्र बनाता है। प्रातःकाल होते ही यह राज-घोषणा नगर में अवश्य कर देनी होगी और उसी क्षण परिवार सहित रानी के साथ मेरा रथ गंगा के तट के लिए चल देगा। मन्त्री पहाड़ की उस चोटी को देख लो, जहाँ अब धीरे-धीरे ऊषा की लाली फूट रही है। मैं उसी देश में रानी के हठ के सामने नीचे गिरूँगा, ताकि मेरा पत्थर बालुकण होकर इस घाटी में बिखर जाय, जहाँ किसी की आहत आत्मा युगों से प्यासी तड़पती थी। जाओ मन्त्री...

[मंत्री का प्रस्थान। राजा चिंतित मुद्रा में वहीं सीढ़ियों पर बैठ जाता है। दायीं ओर से तोता नृत्यवत् गतियों में प्रविष्ट होता है]

तोता : अरी ओ मैना !
शर्म की मारी कहाँ उड़ गयी ?
आ, देख ले अपनी जाति की महिमा !
रानी अपने हठ के आगे
जान ले रही राजा की।

[उधर मैना नृत्यवत् गतियों में प्रविष्ट होती है]

अरी ओ हो मैना !

किसी ने सच कहा है
त्रियाचरित जाने नहीं कोय
खसम मारि कै सत्ती होय।

मैना : बस बस बस !
बहुत हुई बकवास तुम्हारी
खेल दिखाकर भाग यहाँ से !
पुरुष जाति कितनी बदमाश
करूँगी फिर मैं पर्दाफ़ास !

तोता : अच्छा अच्छा मेरी जान !
सुनो लगाकर अपना कान !

(गति बदल कर)

तो दिल थाम ले मैना
फिर मत कहना
खबरदार कहिं उड़ मत जाना
कौन भरोसा जात जनाना !

मैना : चुप चुप बातूनी मर्द !
खेल दिखा कर भाग यहाँ से !

तोता : अच्छा तो देख

(अभिनटन करता हुआ)

नदी किनारे बकरी आयीं
पानी पी घर चली गयीं

पर इक बकरी, जात जनानी
पानी पी उत खड़ी रही।

मैना : ऐसा क्यों ?
पर ऐसा क्यों ?

तोता : नदी धार में सुन्दर फल इक बहता आया
जिसे देखकर बकरी का मन बड़े जोर से ललचाया !
मन में बोली :
हाय ! खाने को वह किसी तरह से फल मिल जाता
तो जी रह जाता—मन भर जाता।

मैना : तो ?
मत आँख नचा
कर खेल ख़तम !

तोता : अरे सुन—न !
उधर पहुँच कर अपने घर बकरे ने देखा
अरे ! इक बकरी गायब !
उसकी यह हिम्मत !
करूँ मरम्मत !!
चला तेज क़दमों से बकरा
पहुँच गया झट नदी किनारे
आ हा हा !
खड़ी मिली वह बकरी प्यारी
जी ललचाये
मुंह लटकाये

मैना : यह खेल झूठ
तेरी बात झूठ !

(मैना का रास्ता रोक कर और गति बदल कर)

तोता : शर्म के मारे कहाँ चलीं ?
सुनो, परेशान बकरे ने कहा :
ओ री बकरी,
अकल की सकरी
यहाँ खड़ी क्यों ?
बकरी बोली :
हे प्राण प्यारे जगत से न्यारे
मेरे बकरे !
मैं तेरे संग घर चलूँ तभी
जब तुम मेरे को वह फल ला दो !

मैना : ठीक कहा
वह था उसका प्रेम !

तोता : हाँ हाँ, क्यों नहीं
क्यों नहीं
सुनो मैना
यह सुन तब बकरे ने कहा :

कि हे री बकरी
कर्म की गठरी
यदि मैं फल के कारण
नदी धार में डूब मरा तो ?
तब बकरी बोली :
सुन ले मैना
फिर मत कहना
प्यारे तुम्हें चाहे जो हो
मैं घर न चलूँगी
बिन फल खाये

मैना : ठीक कहा ।

तोता : (सर्वथा नयी गति से)
बकरी की बात सुन कर
बकरे को क्रोध आया
कर लाल लाल आँखें
उसने खरी सुनाया :
हे बेवकूफ़ बकरी !
मैं राजा अंगध्वज नहीं
जो आके त्रिया बस में
जाते हैं प्राण देने
मैं मारूँ वह ठोकर
आये अकल करीने ।

[तोता अभिनय करता हुआ मैना को मारता है । मैना आगे-आगे भागती है—हाथ जोड़कर क्षमा माँगती हुई । तोता उसका मंच पर पीछा करता हुआ उसके साथ सहसा बाहर निकल जाता है]

राजा : (उठते हुए) ! बकरे ने मेरे कलेजे में सत्य का बाण मार कर मुझे जगा दिया । सच है, मैं जिस रानी को इतना प्यार करता हूँ वह हत्यारी मेरे ही प्राणों की भूखी है :

जन्म कारण भई जननी, भोग कारण बालिका ।
धर्म कारण भई देवी, अन्त कारण कालिका ॥

मेरी इस बुद्धि को धिक्कार है ! और उन स्त्रियों को भी धिक्कार है जो अपनी विष भरी मीठी बातों से पुरुष को इस तरह अधीन कर लेती हैं । और उन पुरुषों को भी धिक्कार है जो इन कपट की कोठरी स्त्रियों की मोहनी में आकर अपना सर्वस्व खो इनके गुलाम हो जाते हैं ।

[राजा आवेश में बढ़ कर कुपित रानी को बाँह से पकड़ कर सामने लाता है]

राजा : बोल रानी ! मैं तेरे समाने अब उस बात को कहूँगा

और इसी क्षण पत्थर हो जाउँगा। बोल रानी, मंजूर है तुझे!

रानी : मन्जूर है।

राजा : मन्जूर है। रुको मैं अभी तुमसे उस बात को कहता हूँ।

[राजा दौड़ कर भीतर से एक चाबुक लेकर आता है और क्रोध से रानी पर टूट कर उसे मारने लगता है]

रानी : क्षमा...क्षमा...क्षमा राजा! मैं जान गयी उस बात को। मैं जान गयी...मैं जान गयी।

[बाहर से दौड़ कर मन्त्री राजा का हाथ पकड़ लेता है। रानी भीतर भाग जाती है]

मन्त्री : यह अन्याय है महाराज! इस तरह स्त्री को मारना आपको शोभा नहीं देता।

राजा : तुम कब से मेरे उपदेशक हो गये मन्त्री? क्या शोभन और अशोभन है, यह वही जानेगा जो उसका भोक्ता है।

मन्त्री : मैं इसका विरोध करता हूँ।

राजा : मन्त्री! पता है तुम किससे ये बातें कर रहे हो?

मन्त्री : पता है।

राजा : दूर हट जावो मेरी आँखों के सामने से। चले जाओ...

[मन्त्री आग्नेय दृष्टि से राजा को देखता हुआ जाने लगता है। राजा की भौहें तनी हुई हैं]

●

दूसरा भाग

[वही दृश्य, वही स्थान। वही दोनों गायक-वादक गाते हुये प्रविष्ट होते हैं]

मैना रूठ गयी ऐसी कि बोला न जाय
मैना रूठ गयी!
हाँ, मैना रूठ गयी ऐसी कि बोला न जाय
मैना रूठ गयी!
नारि अकेली देखकर सुअना किया विचार।
अब किस विधि इससे बचूँ ये है जुलमिन नार॥
मैना रूठ गयी!
क्योंकि तोते ने दास्तान दिखाकरयहसाबित कर दिया कि
तीन लोक तिहुंकाल में महामनोहर नार।
सब दुख की दाता यही देखो सोच-विचार॥
मैना रूठ गयी!
हाँ, मैना रूठ गयी ऐसी कि बोला न जाय
मैना रूठ गयी!!!

[गायक गाते हुए चले जाते हैं। बायीं ओर से हँसते हुए तोता का प्रवेश]

तोता : मैना रूठ गयी !
मैंने तभी कहा—मैना मुझे मत छेड़
पर जिद्दी तिरिया जाति
अपनी कथा देख रूठ गयी !!
(हँसता है)
मैना रूठ गयी !!!

[तभी गुस्से में दायीं ओर से मैना का प्रवेश]

मैना : खामोश !
निर्दय अहंकारी विश्वासघाती पुरुष जात !
कुछ है करनी कुछ है कहना
अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना !
करन चले तिरिया उपहास
मैं करती अब पुरुष जाति का पर्दाफास !

[तोता हँसता है]

मैना : हँस नहीं तोता
रो अपनी जाति के नाम पर !
शर्म से कहीं बीच में न उड़ जाना
सुन दास्ताँ मर्द की बेवफाई का !!

तोता : अच्छा !

मैना : वह रानी
जिस पर तूने कीचड़ उछालने की बेकार कोशिश की
वह पाक नेक औरत थी
पति की उस बेरहमी को भूल कर
प्यार संतोष से उसके संग रहने लगी।
पर तोता.....
देख तू पुरुष जाति का विश्वासघात...!

तोता : फिर बात क्या
दिखा न खेल !
अरे क्या दिखायेगी तू ?

मैना : बस, आँख खोल कर देख
दास्ताँ शुरू हो गयी !

तोता : **(घूम कर जाता हुआ)**—अच्छा दास्ताँ शुरू हो गयी !

मैना : राजा का वह मंत्री विजयसेन
विष भरा मुँह लिये
जा पहुँचा रानी के पास

तोता : तो दास्ताँ शुरू हो गयी !

मैना : **(जाती हुई)** हाँ, दिल थाम देखना
दास्ताँ शुरू हो गयी !

दोनों : दास्ताँ शुरू हो गयी !!

[दोनों का प्रस्थान । दायीं ओर से मंत्री विजयसेन का प्रवेश]

मन्त्री : महारानी ! महारानी !!

[राजभवन की ओर बढ़ता है]

मन्त्री : महारानी, दर्शन दीजिये ! मैं कब से आपके दर्शनों के लिये बेहाल हूँ ।

[रानी का प्रवेश । मन्त्री नत-सिर उनका अभिवादन करता है]

रानी : विजयसेन ! तुम्हारा आज संध्या समय इधर कैसे आना हुआ ?

मन्त्री : महज आपके दर्शन के लिए महारानी ।

रानी : तो दर्शन हो गया, अब जा सकते हो तुम ।

मन्त्री : आप कुछ चिंतित लग रहीं हैं। आपकी चिन्ता सच ही है ।

रानी : मेरे राजा से अलग मेरे दर्शनों का कोई अर्थ नहीं ।

मन्त्री : पर राजा आपको अकेली छोड़ कर स्वयं पाटलीपुत्र चले गये ।

रानी : इससे क्या ? राज-कार्य में सदैव स्त्री को अपने संग बांधे रखना बहुत उचित नहीं है मन्त्री ।

मन्त्री : महारानी आप बहुत ही सरल हैं । भोले शिशु की तरह

अपने पर बीती सब कुछ इस तरह भूल जाती हैं, जैसे आप पर कुछ हुआ ही न हो । आप पर बहुत भयानक जुल्म हुआ है महारानी । एक बहुत बड़ी घटना घटी है आप पर ।

रानी : घटनाओं का इतना क्या महत्व ! जीवन उनसे कहीं बड़ा है मन्त्री । मनुष्य घटना नहीं है, वह पहले अपना जीवन है ।

मन्त्री : मैं दर्शन की भाषा नहीं जानता रानी, केवल इतना ही जानता हूँ कि जीवन की हर घटना तन-मन पर अमिट छाप छोड़ जाती है और मनुष्य उन्हें कभी नहीं भुला पाता ।

रानी : जैसे !

मन्त्री : (चुप है)

रानी : उदाहरण दो मन्त्री ! तुम जैसे कुछ विशेष चिंतना में फँसे हो ।

मन्त्री : जैसे महारानी किसी शान्त तालाब में पत्थर का एक टुकड़ा जोर से फेंका जाय तो उससे जितनी लहरें उठेंगी उनसे सारा तालाब काँपने लगता है। जैसे उस पर भूचाल आ गया है ।

रानी : और समुद्र में ?

मन्त्री : मैं समुद्र की कल्पना नहीं कर पाता महारानी !

रानी : क्यों ! तुमने समुद्र नहीं देखा मन्त्री, जिसमें किसी पत्थर

के बिना ही हर क्षण तरंगें उठा करती हैं और किनारे से सदा टकराती रहती हैं—पर जिसके ऊपर कभी भूचाल नहीं आता। स्त्री जीवन इसी समुद्र की तरह है। भूचाल उस पर आता होगा जो तालाब की तरह छिछला और तृन की भाँति हलका है।

[मन्त्री अट्टहास करके हँसता है]

रानी : अपनी मर्यादा में रहो मन्त्री! मेरी बात का मज़ाक करने वाला अपराधी होता है।

मन्त्री : ओह! तो मेरी इतनी हंसी से ही समुद्र में झट तूफान आ गया?

[पुनः हँसता है]

रानी : यह तुमसे किसने कहा कि समुद्र में तूफान नहीं आता। तूफान तो उसकी सांसों में ही है।

मन्त्री : महारानी, मैं समुद्र के उसी तूफान के दर्शन करने आया हूँ।

रानी : तूफान अंतस में उठता है, बाहर महज उसका शोर ही रहता है।

मन्त्री : आप सत्य कहती हैं महारानी, स्त्री के आहत सम्मान का वह तूफान मैं आपके अन्दर देख रहा हूँ।

रानी : मुझ से इस तरह की बातें करने का तुम्हारा मतलब क्या है?

मन्त्री : आपके प्रति मैं अपनी श्रद्धा प्रकट करना चाह रहा हूँ।

रानी : पर श्रद्धा वाचाल नहीं होती।

मन्त्री : राजा द्वारा आप पर किये गये अपमान की सबसे अधिक चोट मेरे हृदय में है।

रानी : राजा मेरे पति हैं। उनका कोई भी निर्णय मेरे लिये न्याय है। तुम बीती बातों को आज इस तरह उभारने और उनकी नयी व्याख्या देने की कोशिश क्यों कर रहे हो?

मन्त्री : मैं पूर्णतः आप पर न्योछावर हूँ।

रानी : सावधान मन्त्री! राजा की अनुपस्थिति में मुझसे तुम्हारी इस तरह की बातें राजद्रोह हैं—महत्वाकांक्षी पुरुष का ऐसे धर्मात्मा राजा के प्रति यह विश्वासघात है। **(मन्त्री को आग्नेय दृष्टि से देखती है)** दूर हो जा मेरी आँखों के सामने से मन्त्री! मैं यहाँ तुझे अब एक क्षण भी नहीं सहन कर सकती।

मन्त्री : आपने जाना रानी वह रहस्य की बात क्या थी? जिसे आपने तब उतना हठ करके अपने राजा से जानना चाहा था, पर राजा के क्रूर दमन से आप विवशतः चुप रह गयीं!

रानी : किसी की गुप्त बात जानने का यह प्रयोजन मेरा नहीं। राजा की व्यक्तिगत बातों का अपना विशेष मूल्य है।

राजा केवल मेरे पति ही नहीं, वे इतने बड़े देश के शासनकर्त्ता भी हैं।

मन्त्री : पर वह रहस्य की बात सीधे आपसे ताल्लुक रखती है रानी।

रानी : चुप रहो!

मन्त्री : ठीक है, मैं उसे बता कर चुप हो जाऊँगा।...उस रात जब नगर का वह वृद्ध **(दिखाते हुये)** यहाँ रो रो कर राजा से वह गुप्त बात बता रहा था तो मैं राजा से कुछ दूर खड़ा वह सब कुछ सुन रहा था।

रानी : क्या सुन रहे थे तुम? मेरे सामने तुम्हारा छल नहीं चल सकता।

मन्त्री : महारानी, आपके ही चरणों में अपने प्राणों की शपथ लेकर कह रहा हूँ...मैं आपसे एक एक शब्द सच कह रहा हूँ। **(रानी चुप खड़ी रह जाती है)** पहले में आश्वस्त हो लूँ, इस रहस्य को कोई कहीं सुन न ले! **(मन्त्री तेज़ी से बाहर भीतर सब तेख आता है)** गुप्त बात बताने के पहले उस वृद्ध ने राजा से शपथ...ली कि राजा यदि तू इस बात को किसी के सामने कहेगा तो उसी क्षण पत्थर हो जायगा। फिर वृद्ध ने बताया कि आज रात राजा अंगध्वज को एक प्रेतात्मा मार डालेगा।

[रानी दुख से चीख पड़ती है]

मन्त्री : डरो नहीं रानी! राजा ने उसका कारण पूछा। तब उस वृद्ध ने बताया कि उस प्रेतात्मा और राजा का पूर्व-जन्म का बैर है, सो वह आज राजा से अपनी मौत का बदला लेगा।

रानी : बदला!

मन्त्री : हाँ, वृद्ध ने बताया कि राजा अंगध्वज पूर्वजन्म में मणि-सेन नामक साहूकार थे और उनकी रानी चन्द्रमुखी का नाम तब केसर था।

रानी : केसर!

मन्त्री : हाँ, केसर ही नाम था उसका।

रानी : सत्य है, राजा के मुख से यही 'केशर' नाम निकला था। मुझे याद है, उन्होने कहा था केसर नाम मेरा भी हो सकता है। आह! यह मैं क्या सुनने जा रही हूँ!

मन्त्री : वृद्ध ने बताया, एक बार मणिसेन सौदागर अपने व्यापार के सिलसिले में कहीं दूर देश को गया था और उसकी स्त्री केसर घर में अकेली थी। उसकी सेवा में तब केवल एक अठारह साल का ब्राह्मण बालक था। रत्नजोति नाम था जिसका...!

रानी : **(व्याकुल होकर)** फिर क्या हुआ?

मन्त्री : केसर ने बेचारे रत्नजोति को अपने प्रेम के चंगुल

में फंसाना चाहा, पर उस बालक ने उसका विरोध किया। इसका नतीजा यह हुआ कि पति के लौटने पर केसर ने रत्नजोति को जिन्दा ही ज़मीन में गड़वा दिया।

रानी : (आहत) छीः छीः छीः ! बस करो, मैं अब और कुछ नहीं सुनना चाहती।

मन्त्री : वही तो मुख्य है रानी। वही रत्नजोति प्रेतात्मा होकर उस रात अपनी मृत्यु के बदले में राजा के प्राण लेने आया था।

रानी : तो ?

मन्त्री : समझिये आपकी तपस्या से किसी तरह राजा अंगध्वज की जान बच गई।

रानी : (हाथ जोड़े हुए) हे भगवान् ! मेरे भाग्य !

मन्त्री : प्रेतात्मा ने सोचा कि इससे राजा को क्या सजा मिलेगी।

रानी : चुप रहो !

मन्त्री : तब उसने बदला लेने का यह भयंकर उपाय सोचा कि राजा को उसकी रानी के पूर्व जीवन का रहस्य खोल कर उसे जन्म-जन्मान्तर तक राजा से घृणा दिलायी जाय, ताकि उसकी रानी जो पूर्व जन्म की केसर नामक स्त्री है, वह घुल-घुल कर मरे !

रानी : यह झूठ है ! यह तुम्हारा छल है। मुझे अपने पति पर पूर्ण विश्वास है।

मन्त्री : आपका यह महज़ स्वप्न है !

रानी : तब से राजा के व्यवहार में मेरे प्रति अब तक कोई भी अन्तर नहीं है।

मन्त्री : है ! यह आपका भोलापन है कि आप उसे अन्तर नहीं कर पायीं। राजा पहली बार आपको यहाँ छोड़ कर अकेले पाटलीपुत्र गये हैं।

रानी : नहीं ! राजा निश्चय ही मुझे ले जा रहे थे, मैं अपने एक मान में स्वयं ही नहीं गयी।

मन्त्री : वह आपका कैसा मान, जिसे ठुकरा कर राजा यूँ ही चले गये।

रानी : तुमसे इन बातों से क्या प्रयोजन ! मेरे व्यक्तिगत जीवन में तुम कौन होते हो ?

मन्त्री : आपका स्नेही—आपकी मंगल कामना रखने वाला।

रानी : (पुकारती हुई) देवला ! मोहनी !!

मन्त्री : सारी दासियों को आज छुट्टी दे दी गयी है। मुझे आज्ञा दीजिये में आपकी सेवा में विनत हूँ।

रानी : ओह ! तुम्हारी इतनी योजना है ?

मन्त्री : रानी, याद करो, जिस समय क्रोध में राजा आपको उस दिन मार रहे थे, यदि मैंने उस तरह विरोध न किया होता तो अब तक आप इस संसार में न होतीं।

रानी : अच्छा होता, जिससे आज तुम्हारा यह घिनौना मुख न देखना पड़ता। दूर हट जाओ मेरे पास से।

[मन्त्री दूसरी ओर बढ़ जाता है]

मन्त्री : रानी, तुम्हें उस रात का रहस्य बताने वाला तुम्हारा मंगलकारी है। राजा अंगध्वज तुम्हारे जीवन का रहस्य जानकर अब तुम्हें कभी नहीं क्षमा कर सकता। तुम्हारे जिस मुख को देखकर राजा कवि बन जाते थे, अब उस मुख को देखते ही राजा के सामने पूर्व जन्म का वह रहस्य तुम्हारे मुख पर कालिख पोत देती है। इसमें दोषी राजा हैं तुम नहीं हो रानी !

रानी : तो ?

मन्त्री : राजा व्यवहारिक हैं। वह बाहर से सदाचार-वश चुप हो गये हैं, पर ईमानदारी यह है कि वह आपका मुख तक नहीं देखना चाहते। यह बिलकुल स्वाभाविक ही है।

रानी : तो ?

मन्त्री : देखिये न, तब से राजा आये दिन इधर-उधर की कितनी यात्रा करने लगे हैं। अनेक बहानों से वह अब पहले की तरह राज भवन में कहाँ रहते हैं ?

रानी : तो ?

मन्त्री : आपही सोचिये—मैं आपकी सेवा में विनत खड़ा हूँ, आप जो आज्ञा देंगी वही होगा।

रानी : सच वही होगा।

मन्त्री : वही होगा।

रानी : प्रतिज्ञा करते हो ! देते हो वचन !!

मन्त्री : हाँ वचन देता हूँ।

रानी : (क्रोध से) निकल जाओ यहाँ से झूठे प्रपंची ! विश्वास-घाती पुरुष !

मन्त्री : यह नहीं हो सकता रानी ! मैं आपके हित में कुछ और ही निर्णय लेकर आया हूँ।

रानी : तो असली कहानी इससे आगे है !

मन्त्री : हाँ प्रेम कहानी, जो सदा अमर रहेगी।

रानी : (तड़प कर) क्या कहा ?

मन्त्री : आप मेरी होकर इस राज भवन को त्याग दीजिये। मैं आपके लिये एक नया राज्य बनाऊँगा।

रानी : इतनी लम्बी भूमिका के बाद यह स्वप्न है तुम्हारा ? (दायीं ओर बढ़कर) द्वारपाल ! (दूसरी ओर बढ़ कर) सैनिक !

मन्त्री : (हँसता हुआ) रानी, आज हमारे आस-पास कोई नहीं है।

रानी : विश्वासघाती पुरुष, मेरे साथ मेरी यह चिरसंगिनी है।

[रानी कमर से कटार खींच लेती है—मंत्री हँस रहा है]

रानी : यह मत समझना मैं निःसहाय हूँ—अबला हूँ।

मंत्री : हूँ ! मुझे दो यह कटार !

[मंत्री दौड़कर आक्रमण करती हुई रानी के हाथ से कटार छीन लेना चाहता है ।रानी मंत्री पर वार करती है, मन्त्री वार बचा लेता है । उसीसमय पृष्ठ-भूमि में वाद्य स्वर के साथ यह सूचना स्वर उठता है]

स्वर : नागरिको सावधान ! पाटलीपुत्र के महाराजा का आगमन हो रहा है । राजद्रोही मन्त्री से सावधान !

मन्त्री : रानी अब समय नहीं है । मैं अन्तिम बार कहता हूँ, मेरे साथ चलती हो या नहीं ।

रानी : नहीं...नहीं...कभीं नहीं !!!

[मन्त्री रानी पर टूटकर उसके हाथ से कटार छीनने का संघर्ष करता है । मन्त्री घायल हो जाता है, पर अन्ततोगत्वा रानी के हाथ से वह कटार छीन लेता है । पृष्ठभूमि में पुनः राजा के आगमन की उसी भाँति सूचना दी जाती है । रानी चीखकर अन्तःपुर में भागना चाहती है, मन्त्री बढ़कर रानी पर वार कर देता है और रानी की करुण चीख से मंच भर जाता है]

मन्त्री : जा समाप्त हो जा !

[रक्त-रंजित कटार को घुमाता हुआ उसे वहीं फेककर बाहर भाग जाता है । दायीं ओर से लगड़ाती हुई करुण भाव से मैना प्रविष्ट होती है]

मैना : तिरिया जगत महान है राख्या धर्म बचाय
एक धर्म के कारने जीवन दियो गँवाय ।

साँच कहूँ मैं सूगना मति तू झूठी जान
मेरे तेरे बीच में जामिन श्री भगवान ।

नारि नीर गम्भीर नद, ये सब थाह न होय
छिछले नर परसिद्ध जग, जानि प्रकट सब कोय ।

●

तीसरा भाग

[मैना चुपचाप उदास खड़ी है। सहसा बायीं ओर से तोता आता है। उसे देखते ही मैना उपेक्षा में मुँह फेर लेती है। फिर भी तोता उसके आगे जाता है। मैना फौरन दूर हट जाती है। तोता बड़े-बड़े क़दम उठा कर पुनः मैना के पास जाता है। मैना और भी कटुता से उसे देख कर दूर चली जाती है। फिर तोता जैसे ही उसके पीछे क़दम उठाता है]

मैना : (सक्रोध) मुझे पुरुष जाति से...
नफरत है
नफरत है
नफरत है !!

तोता : तू तिरिया है न !

मैना : तो ?

तोता : तूने जो पुरुष जाति के लिये कहा...
वह तेरी गफलत है
गफलत है
गफलत है !!!

मैना : आँख के अंधे
देख वह रानी मरी पड़ी है
इस अबला को पुरुष ने मारा

तोता : अबला !... (तेज़ी से हँसता है)
अबला
अरे ओ खेल वालो
बजाओ तबला
तबला...तबला !

[तबले का संगीत। उसी गत पर तोता मैना का हाथ पकड़ कर मंच पर अपने साथ नचा लेता है]

तोता : (सहसा) बंद करो तबला !

[तबला बंद]

तोता : मैना मेरी जान
मत हो परेशान
अब देख मेरी दास्तान।

[दोनों का तेज़ी से प्रस्थान। बायीं ओर से दुखी राजा अंगध्वज का प्रवेश। वह रानी के सिरहाने सिर थाम कर बैठ जाता है]

राजा : हाय दई अति निरदई
कैसी विछुरन कीन

रानी बिन तलफत मँरू
जैसे जल बिनु मीन ।

राजा : भगवान्, मेरी निर्दोष रानी को एक बार फिरसे जिला दो !...मेरे सत्कर्म तुम कहाँ हो ?

[राजा का सिर रुदन से झुका है । दायीं ओर से सत्कर्म का प्रवेश]

सत्कर्म : राजा !

राजा : कौन मेरे सत्कर्म ?

[दौड़ कर उसके चरण में झुकता है]

सत्कर्म : नहीं, नहीं । इसकी कोई आवश्यकता नहीं । मेरी सत्ता तुमसे अलग नहीं है । तुम्हीं में मेरा अस्तित्व है ।

राजा : मैं अपनी रानी से नहीं अलग हो सकता ।

सत्कर्म : वही तो मुझे पता चला कि राजा तुम बिना अपनी इस रानी के जीवित नही रहना चाहते ।

राजा : यह सत्य है । पर तुम चुप क्यों हो गये सत्कर्म ! तुम्हारे पास भी इसका कोई रास्ता नहीं है क्या ?

सत्कर्म : है रास्ता । पर वह बहुत कठिन है राजा ।

राजा : जैसा भी हो, मैं किसी भी कीमत पर अपनी रानी से बिछुड़ना नहीं चाहता । बोलो, जल्दी मुझे कोई रास्ता बताओ ।

सत्कर्म : वह केवल एक ही रास्ता है राजा । तुम अपनी आयु का आधा हिस्सा रानी को दे दो, फिर रानी तुम्हारी आयु से जी जायगी ।

राजा : मैं तैयार हूँ ।

सत्कर्म : तो लो यह जलपात्र । **(छोटा सा जलपात्र निकाल कर देता है)** इसमें से थोड़ा सा जल अपनी अंजुलि में लो ।

[राजा जल लेता है]

सत्कर्म : कहो कि मैं सहर्ष अपनी आयु का अपने जीवन का आधा भाग अपनी इस दिवंगत रानी को देता हूँ । वह मेरे ही जीवन का यह भाग लेकर जी जाय ।

[राजा यही दुहराता है]

सत्कर्म : यही शब्द, यही वाक्य एक बार पुनः अपने आपसे कहो और यह कह कर अंजुलि का जल रानी पर छिड़क दो । **(सहसा रुक कर)** एक बात और सुन लो राजा, इस जलपात्र को सदा छिपा कर अपने पास रखना । आवश्यकता पड़ने पर इसी जल से तुम अपनी दी हुई अवस्था वापस ले सकोगे । चलो, वचन देकर रानी पर जल छिड़क दो...हाँ, रुको-रुको...ख़बरदार, रानी को यह जीवन रहस्य कभी मत बताना ।

राजा : कभी नहीं बताऊँगा ।

सत्कर्म : तो चलो, अपने वचन देकर रानी पर जल छिड़क दो।

राजा : मैं सहर्ष अपनी आयु का, अपने जीवन का आधा भाग अपनी इस दिवंगत रानी को देता हूँ। यह मेरे ही जीवन का यह अंश लेकर जी जाय।

[यह कह कर राजा द्वारा जल छिड़कते ही रानी जी उठती है। सत्कर्म अदृश्य हो गया है]

राजा : रानी !...रानी !

रानी : (उठती हुई) ओह ! मैं आज कितनी देर तक सोती रही।

राजा : हाँ रानी।

रानी : पर आप मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं ! आप ऐसा क्यों मुस्करा रहे हैं ? मैं सोयी नहीं थी क्या ?

राजा : तुम और यहाँ सोओगी—आओ रंगमहल में चलें। सब तुम्हारे लिये बेचैन हैं।

रानी : (साश्चर्य) मेरे लिये बेचैन ! मैं कहीं चली गयी थी क्या ? बोलिए—आप बताते क्यों नहीं ?

राजा : अपने आप को जानना बड़ा दुखदायी है रानी ! क्या करोगी जान कर।

रानी : किन्तु मैं जानना चाहती हूँ।

राजा : तो सुनो, विश्वासघाती विजयसेन ने तुम्हारी हत्या कर दी थी।

रानी : मेरी हत्या—मैं मर गयी थी ? फिर मैं जी कैसे गयी ?

बोलिये...बताइये मुझे !

राजा : उस जीने का रहस्य मैं नहीं जानता रानी !

रानी : फिर कैसे कहते हो कि मैं मरकर जी गयी।

राजा : मैंने तुम्हें मरा हुआ देखा, फिर अभी जिन्दा होते हुए भी देख रहा हूँ।

रानी : लेकिन कैसे ?

[राजा चुप है]

रानी : तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो।

राजा : नहीं...नहीं रानी।

रानी : तुम...तुम मेरे लिये कपट रखते हो।

राजा : रानी...!

रानी : मन्त्री विजयसेन सच ही कहता था...।

राजा : विजयसेन ! मत लो उस विश्वासघाती का नाम।

रानी : सच बोलने वाले का नाम मैं जरूर लूँगी।

राजा : हत्यारा विजयसेन।

रानी : विजयसेन मेरा शुभचिन्तक है।

राजा : वह हत्यारा...!

रानी : वह मेरा हत्यारा नहीं है...यह महज़ शक है तुम्हारा।

राजा : काश यह सच होता !

रानी : तो मेरे असत्य का प्रमाण क्यों नहीं देते ! सिर्फ मुझसे किस्सा बुझाते हैं...! मैं मर गयी...फिर जी गयी, जैसे

खेल है यह सब। यह सब कपट-व्यापार जैसे मैं नहीं समझती।

राजा : रानी !

रानी : पति-धर्म का बड़ा अभिमान था मुझे। मैंने इसके लिये क्या क्या नहीं किया ! क्या क्या नहीं सहा ! इसके इनाम में मुझे तुमसे कपट मिला।

राजा : रानी चुप हो जाओ। चलो विश्राम करलो।

रानी : विश्राम !...विजयसेन की बात सच है।

राजा : रानी, झूठ का विश्वास मत करो तुम।

रानी : मैं इसकी परीक्षा करती हूँ अभी...कहाँ है विजयसेन ?

राजा : वह अपराधी-विश्वासघाती मन्त्री अब यहाँ नहीं है।

रानी : यहाँ नहीं है...? फिर क्या हुआ उसे... ?

राजा : उस हत्यारे मन्त्री को कारागार में डाल दिया गया है।

रानी : कारागार में ?

राजा : हाँ ! और कल सूरज निकलने से पहले उसका सिर काट कर तुम्हारे चरणों में रख दिया जायेगा।

रानी : नहीं नहीं ! ऐसा नहीं होगा ! ऐसा नहीं होगा !

राजा : रानी !

रानी : नहीं नहीं...ऐसा नहीं होगा। बोलिये, मन्त्री का दोष क्या है ? उसने कौन सा अपराध आपके संग किया है ?

राजा : अपराध ? उसने विश्वासघात किया है।

रानी : कैसा विश्वासघात ? मुझे कुछ भी नहीं मालूम।

राजा : अच्छा है जो तुम्हें कुछ नहीं मालूम है।

रानी : हाँ, मुझे इसका अवश्य अनुभव है कि मन्त्री हमारा विश्वासपात्र है, कि मन्त्री हमारे लिये मंगल कामना रखता है कि...!

राजा : **(बीच ही में)** मन्त्री हत्यारा है। रानी तुम्हें मालूम होना चाहिये कि मन्त्री विजयसेन जबरन तुम्हारा अपहरण करना चाहता था। तुमने उसका विरोध किया और इस पर उसने तुम्हारी निर्मम हत्या कर दी।

रानी : यह झूठ है। इसके विषय में मुझे कुछ नहीं मालूम। कहाँ है मन्त्री, मैं उससे तुरन्त मिलना चाहती हूँ।

राजा : तुम उससे अब नहीं मिल सकतीं। कल प्रातःकाल वह सदा के लिए समाप्त हो जायेगा।

रानी : पर मैं उससे ज़रूर मिलना चाहती हूँ।

राजा : ऐसा नहीं हो सकता।

रानी : होगा।

राजा : रानी आखिर तुम चाहती क्या हो ?

रानी : **(अपने से)** ओह ! मन्त्री सच ही कह रहा था।

राजा : क्या सच कह रहा था मन्त्री ?

रानी : कुछ नहीं। तुम्हें मन्त्री से ईर्ष्या है, क्योंकि वह मेरी प्राण रक्षा चाहता है। तुम्हें मन्त्री से जलन है, क्योंकि वह तुम्हारा रहस्य जानता है। मन्त्री पर झूठा अभियोग लगा कर तुम क्यों उसकी हत्या कर देना चाहते हो—यह भी मैं जानती हूँ।

राजा : रानी !

रानी : मन्त्री की बात सच है कि तुम मुझे इस राजमहल के जेलखाने में बन्द कर मुझे आजीवन दंड देना चाहते हो। तुम्हें उस प्रेतात्मा की बात पर विश्वास है।

राजा : रानी !

रानी : मैं अपने उस मन्त्री के वगैर यहाँ एक क्षण भी नहीं रह सकती। यदि मेरी सहायता के लिये मन्त्री न होता तो अब तक मैं इस संसार में न होती।

राजा : रानी तुम पागल हो रही हो। तुमने अपना सारा विवेक खो दिया है।

रानी : मैं अपने पूर्ण विवेक में हूँ राजा। मेरे सामने अब सारी बातें स्पष्ट हैं। आपसे अधिक विश्वास मुझे अपने इस मन्त्री पर है, क्योंकि उसका विश्वास मुझ पर है। प्रेतात्मा की सारी बातें मेरे प्रिय मन्त्री ने मुझे बता दीं थीं। जब कि उसी बात को मैंने तुमसे जानना चाहा था, उत्तर में तुमने मुझे हत्यारे की तरह मारना चाहा था। (रुककर) मेरी रक्षा उसी मन्त्री ने की।

राजा : रानी, चलो कुछ देर विश्राम कर लो। विश्वास करो, तुम्हारा हितैशी मैं ही हूँ।

रानी : यह असम्भव है।

राजा : नहीं यही सम्भव है।

रानी : नहीं, यही असम्भव है। (रुककर) मेरे पूर्व जीवन की

उस घटना पर विश्वास करके तुम अब मुझसे प्रेम नहीं करते।

राजा : रानी !

रानी : मन्त्री ने सच कहा था—कि उस प्रेतात्मा ने सोचा कि राजा की हत्या करने से रानी को क्या सजा मिलेगी। तभी उसने मुझसे बदला लेने का यही भयंकर उपाय सोचा कि राजा को उसकी रानी के पूर्व जीवन का रहस्य खोलकर उसे जन्मजन्मान्तर तक राजा से घृणा दिलायी जाय, ताकि उसकी रानी जो अपने पूर्व जन्म की केसर नाम की स्त्री है वह घुल-घुल कर मरे। (रुककर) पर मैं इस तरह घुल-घुलकर नहीं मरना चाहती। यह जीवन मेरा है।

राजा : तुम शायद ठीक ही कहती हो, यह जीवन तुम्हारा ही है।

[राजा तेजी से भीतर चला जाता है]

रानी : (दायीं ओर बढ़कर) कौन है वहाँ राजद्वार पर ? कोई नहीं। चारो ओर सूना है। तो सारा पहरा मेरे मन्त्री पर लगा है। (प्रतिज्ञा स्वर में)तो मैं भी स्त्री हूँ। कितना भी कठिन नाटक मुझे क्यों न रचना पड़े, मैं अपने मन्त्री को कारागार से तुरन्त छुड़ाती हूँ।

[रानी भीतर चली जाती है। कुछ ही क्षणों बाद दायीं ओर से तोता का प्रवेश]

तोता : मैना मेरी जान

देख ले औरत की दास्तान
जिस राजा ने उसके लिए दे दी अपनी आधी जान
उसी के सिर पर अब चढ़ गया शैतान
(बहुत तेज़ी से हँसता है) अजब है दास्तान
यारो तिरिया जगत का, अजब है
दास्तान यारो.....।

नारि नसावै तीन सुख, जो नर पासै होइ
सुख सन्तोषहिं ज्ञान में पैसि न सकिहें कोइ।
अजब है दास्तान यारो तिरिया जगत का
अजब है दास्तान यारो...।

एक कनक अरु कामिनी विष-फल की ए उपाइ।
देखे ही से विष चढ़े खाये में मरि जाई।
अजब है दास्तान यारो तिरिया जगत का
अजब है दास्तान.....

(सहसा तेज़ स्वर में)
गाना बन्द मेहरबान
आगे देखो दास्तान।

[झुककर आदाब बजाता हुआ दायीं ओर अदृश्य—आगे-आगे राजा का प्रवेश—पीछे-पीछे रानी आती है]

राजा : रानी, मैं तुम्हें सदा सुखी देखना चाहता हूँ।

रानी : मैं भी सदा आपको वही देखना चाहती हूँ। आपके ही कल्याण में मेरा जीवन है।

राजा : हमारा यह जीवन एक रथ है—जिसमें स्त्री और पुरुष उसके दो पहिये हैं, और उसकी धुरी हमारा पारस्परिक विश्वास है। (रुककर) रानी तुम इस तरह चुप क्यों हो?

रानी : मैं आपकी बातों को अनुभूत कर रही हूँ।

राजा : पर तुम इस तरह उदास क्यों हो? बोलो रानी, मैं तुम्हारी खुशी के लिए कुछ भी करने को तैयार हूँ।

रानी : सच!

राजा : हाँ, कोई भी इच्छा प्रकट करके देख लो! मैं तुम्हारी खुशी के लिए उसे पूरा करता हूँ या नहीं।

रानी : मुझे आपके प्रेम का पूरा विश्वास है।

राजा : नहीं रानी, तुमने मेरे प्रेम और विश्वास के प्रति शंका की थी, तभी मैं उसकी तुम्हारे लिये परीक्षा देना चाहता हूँ। बोलो रानी, ज़रा भी संकोच न करो।

रानी : सच!

राजा : हाँ हाँ, सच।

रानी : तो मेरी इच्छा है कि मन्त्री विजयसेन को कारागार से मुक्त किया जाय।

राजा : स्वीकार ! और...और आज्ञा करो रानी.....।

रानी : और उसे मेरे सामने हाजिर किया जाय।

राजा : मन्जूर ! और .....!

रानी : मन्त्री से पूछूंगी कि उसने ऐसा राजद्रोह क्यों करना चाहा ?

राजा : अवश्य ! यही होगा। पर इसके बाद मन्त्री को क्या दंड दिया जायगा ?

रानी : वह फैसला मैं करूंगी।

राजा : स्वीकार ! यह भी स्वीकार।

रानी : फिर विलम्ब क्यों ?

राजा : कोई विलम्ब नहीं। आओ मेरे संग चलो रानी, मन्त्री विजयसेन की मुक्ति के लिये मैं अभी आज्ञा देता हूँ।

रानी : आप धन्य हैं राजा।

राजा : जाओ रानी मुझे पूरा विश्वास है तुम मन्त्री विजयसेन के कुकर्मों का सुन्दर न्याय करोगी।

रानी : अवश्य।

[दोनों का प्रस्थान। पृष्ठभूमि से यह राजाज्ञा सुनायी पड़ती है—उद्घोषण—राजाज्ञा है कि बन्दी विजयसेन जो राज्य का पूर्व मन्त्री था वह कारागार से मुक्त किया जाय]

[बहुत ही तेज गति में आता हुआ तोता प्रविष्ट होता है—तेज हँसता हुआ]

मैना : (गुस्से से आती हुई)
हँसता क्या है ?
यही चला दास्तान दिखाने !

तोता : अरर भाई,
तुझको ही मैं ढूंढ़ रहा था
मैंने सोचा मैना रानी
शरम के मारे कहाँ उड़ गयी।

मैना : अजी में क्यों उड़ती !

तोता : भई, रानी की दास्तान निराली
करती है औरत को काली।

मैना : अह ह ! तुम्हीं बड़े सतवादी !

तोता : नहीं नहीं, तुम्हीं बड़ी सतवंती
बाप रे बाप ! कैसा नाटक तिरिया रचती !

मैना : ओ हो ! बड़ा चला तू चोंच दिखाने।

तोता : तो चोंच बन्द !
हाथ कंगन को आरसी क्या
अब आगे की दास्तान देख लो
औरत की करिश्मान देख लो

मैना : देखती हूँ
पर मैं भी तुझे दिखाऊंगी

ऐसा मज़ा चखाऊँगी
कि रोयेगा तू पुरुष जाति पर।

तोता : बस चोंच बन्द
दास्तान शुरू.....!

[दोनों दायीं-बायीं ओर भाग जाते हैं। पृष्ठभूमि से घोषणा]

घोषणा : सैनिकों का पहरा समाप्त ! मन्त्री कारागार से मुक्त कर दिया गया।

[पृष्ठभूमि में वाद्य-ध्वनि संगीत समाप्त होते ही सामने दायीं ओर से मन्त्री का प्रवेश]

मन्त्री : **(प्रवेश करते ही)** रानी ने मुझे बुलाया ! रानी सचमुच जी गयी क्या ? अद्‌भुत है राजा की जीवन शक्ति ! पहरे के सैनिकों ने संकेत किया था—पर देखे बिना विश्वास नहीं होता **(सहसा सभय)** कौन—ओह कोई नहीं ! अकारण ही मुझे भय लग रहा है। ओह ! कितना प्यासा हूँ मैं।

[रानी का सहसा प्रवेश]

मन्त्री : महारानी !
रानी : इतना आश्चर्य क्यों ?
मन्त्री : रानी !
रानी : मन्त्री, तुमने सच कहा था।

[मन्त्री साश्चर्य देख रहा है]

रानी : राजा के भयानक कपट का मैं अब अनुभव कर रही हूँ। **(रुक कर)** मन्त्री, हमारे पास बहुत समय नहीं है।
मन्त्री : आज्ञा दीजिये महारानी !
रानी : मन्त्री मुझे भरोसा और विश्वास चाहिये। मैं कपट के संसार में अब नहीं रह सकती।
मन्त्री : रानी !
रानी : रंगमहल में राजा को सुला आयी हूँ।
मन्त्री : तो...!
रानी : पहरा भी रोक दिया है। कहीं कोई सैनिक नहीं है।
मन्त्री : तो...
रानी : मैं तुम्हारे संग चलने को बिलकुल तैयार हूँ।
मन्त्री : **(साश्चर्य)** रानी ! मैं कोई स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ।
रानी : जल्दी करो मन्त्री ! यहाँ और रुकना ख़तरे से खाली नहीं हैं। चलो...भाग चलो जल्दी।
मन्त्री : कहाँ ?
रानी : जहाँ तुम हमेशा हमेशा के लिये मुझे अपनी रानी बना कर रख सको।
मन्त्री : किन्तु राजा का एहसान ?
रानी : कैसा एहसान राजा का ?
मन्त्री : तुम्हारे संग भी एहसान रानी। यह जीवन तुम्हें राजा ने ही दिया है।

रानी : क्या कहा ?

मन्त्री : ओह ! रानी को कुछ नहीं पता है। तब तो सुन्दर है—लेकिन राजा का एहसान मुझ पर भी तो है।

रानी : क्या कहा ? तुम पर राजा का एहसान...झूठ ! कभी नहीं। मैंने...मैंने तुम्हें कारागार से मुक्त किया है।

मन्त्री : रानी, तुम...मुझे।

रानी : हाँ हाँ मैंने तुम्हें...तुम्हें आश्चर्य क्यों ?

मन्त्री : लगता है रानी वह सब भूल चुकी है। **(प्रकट)** तो चलो रानी मैं तैयार हूँ।

रानी : चलो।

[रानी मन्त्री के संग जैसे ही जाने लगती है, उसी क्षण भीतर से राजा का प्रवेश]

राजा : रुक जाओ वहीं ! ख़बरदार, भागने की बेकार कोशिश मत करना। रानी इधर आओ !!

रानी : अब मेरा रास्ता इधर है। अब मैं उधर नहीं आ सकती।

राजा : ओह मन्त्री के संग ! और मेरे संग इस तरह नाटक रच कर।

मन्त्री : मेरे विश्वास और बाहुबल के सहारे।

राजा : हूँ...सत्य कहते ही तुम।

मन्त्री : चलो रानी।

राजा : ठीक है ! मैं तुम्हें नहीं रोकता। पर सुनो—मैंने जो कुछ तुम्हें दिया था रानी, उसे इसी क्षण मैं वापस ले रहा हूँ

[यह कहते ही राजा उसी जलपात्र से दायीं अंजुलि में पानी लेकर रानी पर छिड़क देता है। रानी तत्काल वहीं लड़खड़ा कर गिर पड़ती है]

मन्त्री : यह क्या हुआ ?

राजा : **(झपटता हुआ)** रुको मैं बताता हूँ तुम्हें।

[राजा के दौड़ते ही मन्त्री भाग निकलता]

राजा : भाग गया। **(रानी के पास खड़ा होकर)** रानी ! रानी !! अब नहीं बोलोगी। **(हँसता हुआ)** रानी अब तुम सदा के लिये चुप हो गयीं ! **(रुककर)** दास्तान ख़त्म हो गयी ! **(पुकारता हुआ)** द्वारपाल ! रानी मर गयी। लाश उठा कर राजमार्ग में फेंक दो। **(राजा भीतर जाने लगता है। सहसा वापस लौट कर)** किन्तु नहीं। रानी मेरी स्त्री थी। उसका अंतिम संस्कार, इस तरह क्यों होगा ? रानी को राजा का कंधा मिलाना चाहिए।

[राजा बायीं ओर जाता है जिधर रानी मरी पड़ी है। राजा के

अदृश्य होते ही बायीं ओर से बेतरह हँसते हुये तोता का प्रवेश]

तोता : अरे बाप रे बाप !
कितना धोखा तिरिया देती !!

[बायीं ओर से उसी तरह हँसती हुई मैना आती है]

मैना : हाय रे हाय !
कितनी निर्मम पुरुष की जात !

तोता : बेशर्म, देखा नहीं क्या किया रानी ने ?

मैना : तोताचश्म, और देखा नहीं क्या किया राजा ने ?

तोता : रानी ने विश्वासघात किया ।

मैना : और राजा ने उम्र ले रानी को मार दिया !
पुरुष निर्दयी हर लियो प्रेमिल रानी प्रान
फिर भी तू बोलन चला रे तोता अज्ञान ।

तोता : **(ठहाका मार कर हँसता है)**
प्रेमिल रानी
राजा भरथरी ने सच कहा है...
धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च ।

मैना : नादान, नारी देवता है !

तोता : धिक्कार इस देवता पर !

मैना : क्रोध धर्म से सदा पुरुष तिरिया मन तोरत ।

तोता : ऐसी नारि निहारि हाथ पंडित जन जोरत ।

[इसी समय जब तोता मैना आवेश में एक दूसरे से व्यंग-वाण द्वारा लड़ रहे हैं, मन्दस्मित हंस का आगमन होता है]

हंस : बस बस बस !
न हर ज़न ज़नस्ती, न हर मर्द मर्द
ख़ुदा पंज अंगुश्त, यकसाँ न कर्द ।

तोता : ओ हो हंस राजा !

[मैना चुप देखती रह जाती है]

हंस : मैना रानी, शान्त हो जाओ—इस दुनिया में सभी मर्द एक से नहीं होते । **(तोता से)** और तोता राजा, तुम भी सुनो दुनिया में सभी औरतें एक ही तरह की नहीं होतीं ।

तोता : **(मैना की ओर संकेत कर)** उन्हें समझाओ हंस राजा ।

मैना : मुझे समझ है,
उन्हें समझाओ हंस राजा !

तोता : तो मैं ही बेसमझ हूँ ।

मैना : और क्या ?

तोता : नहीं बेसमझ तू है ।

मैना : तू है...तू है...तू है ।

हंस : यह क्या है ?

तोता : यह झगड़ा सनातन है ।

मैना : और इसका इन्साफ ?

तोता : हाँ इसका इन्साफ ?

हंस : इसका इन्साफ है !

मैना : तो हमारा इन्साफ करो तुम !

तोता : हाँ कर दो इन्साफ हंस राजा ।

हंस : मेरा इन्साफ मंजूर होगा न ! क्यों मैना, क्यों तोता, मुझे वचन दो ।

तोता : मुझे मंजूर है ।

मैना : मुझे भी मंजूर है ।

हंस : तो आओ अपने-अपने हाथ मुझे दो ।

[हंस तोता-मैना के हाथ मिला देता है]

हंस : तुम दोनों की शादी ।

तोता : (प्रसन्नता से उछल कर) शादी !

[मैना सलज्ज]

तोता : हमारी शादी ! (प्रसन्नता से झूम उठता है)

सुनो बाजा वालो
गाने वालो
नाच वालो
आवो मेरी शादी !

[यह कहते ही दोनों ओर से जंगल के पक्षी नाचते-बजाते आते हैं—कबूतर ढोल बजाता हुआ—श्यामा हारमोनियम बजाती हुई—कोयल शहनाई बजाती हुई—गवरैया मजीरा

लिये हुये । तोता मैना एक दूसरे का हाथ पकड़े हुये नाचने लगते हैं, और इनके चारों ओर वे पक्षी नाचते हुये अपने वाद्य यंत्र बजाते हैं]

गायन

तोता-मैना की हुई जैसे मुराद पूरी
ईश्वर आप सबकी करें वैसे ही मुराद पूरी ।
यहाँ न पुरुष बड़ा
यहाँ न नारि बड़ी
दोनों इस रथ की धुरी ।
ईश्वर आप सबकी करे वैसे ही मुराद पूरी ।

लक्ष्मीनारायण लाल

जन्म, ४ मार्च १९२५ ई० जलालपुर—जिला बस्ती, उत्तर प्रदेश। प्रारम्भिक शिक्षा बस्ती ही में। प्रयाग विश्वविद्यालय से १९५० में हिन्दी में एम० ए०, तथा १९५२ में 'हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि' पर डाक्ट्रेट। कुछ समय तक आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र पर ड्रामा प्रोड्यूसर। आजकल दिल्ली विश्वविद्यालय के खालसा कालेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष।

इलाहाबाद में नाट्यकला और रंगमंच के प्रसिद्ध संस्थान 'नाट्यकेन्द्र-स्कूल ऑफ ड्रेमेटिक आर्ट' के संस्थापक और संचालक।

आपकी अन्य प्रसिद्ध नाट्यकृतियाँ : अंधाकुआँ, मादा कैक्टस, सुन्दर रस, तीन आँखोंवाली मछली, सूखा सरोवर और नाटक बहुरंगी आदि।